International Journal of Advanced Research in Engineering Technology & Science ISSN: 2349-2819

Email: editor@ijarets.org Volume-4, Issue-1 January- 2017 www.ijarets.org

संस्कृत वांगमय मे आयुर्वेद

डॉ. कृष्णा गोड

सह. आचार्य संस्कृत राज. कला महाविद्यालय

सीकर, राज.

विष्व के सर्वप्रथम लिपिबद्ध साहित्य के रूप में वेदों को स्वीकार किया गया है। वेद षब्द से चारो संहिता, ब्राहम्ण, आरण्यक, उपनिषद आदि सभी का समावेष है। वेदान्त दर्षन के अनुसार वेद अनादि और अपौरूषे ज्ञान है जो प्रलय के बाद भी बना रहता है।

वैदिक साहित्य का आरम्भ ऋगवेद से हुआ इसके बाद यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्वेद का संकलन किया गया। इनके अतिरिक्त चार उपवेद है।

1. आयुर्वेद
2. धनुर्वेद
3. गान्धर्ववेद
4. अर्थवेद

हम यहाँ आयुर्वेद के विषय मे चर्चा करेंगे आयुर्वेद के सभी मूलग्रंथ संस्कृत भाषा मे ही लिखे गये है। आधुनिक काल मे इनका हिन्दी, अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं मे अनुवाद किया जा रहा है।

आयुर्वेद एक जीवन विज्ञान है यह अनुभव अनुसंधान पर आधारित तथा कला अनुसार विकसित स्वास्थ्य रक्षा एवं उपचार की पद्धति है। वैदिक काल के बाद आर्षकाल आता है। आर्षकाल की चरख संहिता, सुश्रुत संहिता आयुर्वेद के प्राचीनतम ग्रंथ स्वीकार किये गये है। अष्टांग संग्रह एवं अष्टांग ह्रदय भी आयुर्वेद के प्रमुख ग्रंथ है जो संस्कृत भाषा मे ही लिखे गये है।

आयुर्वेद मे स्वस्थवृत्त भी एक विषय है जिसमे समझाया गया है कि मिथ्याचार, मिथ्या विहार सभी रोगो का कारण माने जाते है। इनसे अन्य रोग तो होते ही है किंतु ह्रदय पर इनका दुषित प्रभाव षीघ्र ही देखा जाता है। भौतिकता के इस युग मे अपनी समृधि के उत्कृष्ट के क्रम में मनुष्य विभिन्न समस्याओं मे उलझा रहता है।

1. धर्म अर्थ काम व मौक्ष की प्राप्ती के साधन इस ष्षरीर को दीर्घजीवी बनाने के लिए आयुर्वेद ने सदाचार व सात्विक आहार की व्यवस्था दी है। हिमाचल पर्वत श्रृंखलाओं के निकट एकत्रित होकर ऋषिगणों ने चिंतन करके अपने अपने विज्ञान से दिये गये सुझावो को व्यादी के प्रतिषोधार्थ दिनचर्या, रात्रिचर्या, ऋतुचर्या एवं सदाचार आदि का ज्ञान दिया है। सद्वृत्तानुषासनके नियमो को प्रतिष्ठापित करके रोगोपषमन के लिये उत्तम चिकित्सा के उपायों का संचालन एवं व्यवहार मे उतारने हेतु जन सामान्य मे उनका प्रचलन भी किया। आज भारत मे निम्नाकिंत चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध है।
    1. एलोपेथि
    2. आयुर्वेदिक
    3. होम्यौपेथिक
    4. यूनानी
    5. इलेक्ट्रोपेथी
    6. सिद्ध चिकित्सा
    7. योग चिकित्सा

हालांकि अतिषीघ्र लाभ एलोपेथि चिकित्सा द्वारा मिलता है। किंतु पूर्ण लाभ आयुर्वेद से प्राप्त होता है। हालांकि देर जरूर लगती है लेकिन रोग से पूर्णतया मुक्ति मिलती है। इसका ना कोई साइड इफेक्ट होता है और ना यह हानिप्रद है। किंतु इसमे खटाई, तेल इत्यादि का परहेज बताया जाता है। यह सर्वसुलभ श्रेष्ठ चिकित्सा आज भी जबरदस्त प्रचलन में है।

योगेन चित्तस्य पदेन वाचाम्

मलं षरीरस्य च वैधकेन।

योऽपा करोतं प्रवरं मुनीनाम्

पतञ्जलिम् प्राजलिं रानतोऽस्मि।

आयुर्वेद के पूज्यनीय देव श्री धन्वन्तरी है जो अमृत कलष सहित अवतरित हुये है। इनका धनतेरस के दिन हर्षोल्लास से पूजन किया जाता है।

ह्रदवल्लभावलेह – डॉ. राम कृष्ण आंगिरस

संदर्भ ग्रंथ

नाम	लेखक	प्रकाषक
संस्कृत साहित्य का इतिहास	सहायक आचार्य रामदेव साहू	जयपुर
रसकपूर कल्प विज्ञान	डॉ. राम कृष्ण आंगिरस	जयपुर
ह्रद् वल्लभावलेह	डॉ. राम कृष्ण आंगिरस	जयपुर
चरक संहिता	आचार्य चरक	चौ.सु.भा. प्रकाषन
सुश्रुत संहिता	आचार्य सुश्रुत	चौ.सु.भा. प्रकाषन